आला हज़रत (रहमतुल्ला अलैह) के इल्मे तक़वीम के शहंशाह होने पर मुँह बोलता सबूत फतावा रज़विया की 26 वीं जिल्द में मौजूद इमामे अहले सुन्नत का इल्मे तक़वीम पर मुश्तमिल रिसाला "नुत्कुल हिलाल बारिखु विलादिलहबीब वल विसाल" का आसान अंदाज़

चाँद की गवाही

आला हज़रत और इल्मे तक़्वीम

मौलाना अबू शफीअ
मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله   وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ الله

आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ)के इल्मे तक़वीम के शहंशाह होने पर मुँह बोलता सबूत

फतावा रज़विया की 26 वीं जिल्द में मौजूद इमामे अहले सुन्नत का इल्मे तक़वीम पर मुश्तमिल रिसाला **"नुत्क़ुल हिलाल बारिखु विलादिल हबीब वल विसाल"** का आसान अंदाज़ में ख़ुलासा बनाम

चाँद की गवाही

आला हज़रत और इल्मे तक़वीम



मुरत्तिब :मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान

अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली



जुमला हुकुक ब हक्के नाशिर महफ़ूज़

किताब	:	चाँद की गवाही
मुरत्तिब	:	मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
कमपोजिन्ग	:	मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
पेज	:	48
नाशिर	:	मकतबा दारुस्सुन्ना देहली
पता	:	फैज़ाने मदीना, ताज नगरी फेज़ 2, ताजगंज, आगरा, उत्तर प्रदेश, इंडिया, पिन कोड 282001, राबिता नंबर 8808693818

इस किताब को हासिल करने और छपवाने के ख्वाहिश मंद हज़रात इस नंबर पर राबिता करें : 8808693818

इस किताब में अगर कोई गलती पाएं तो इस मेल आई डी पर ज़रूर इत्तिला फरमाएं

Shafiqmadani26@gmail.com

फ़ेहरिस्त

इमामे अहले सुन्नत का तआरुफ़

विलादत

आला हज़रत की पैदाइश बरेली शरीफ के मोहल्ला जसूली में 10 शव्वाल, 1272 हिजरी, शनिवार के दिन, जोहर के वक़्त मुताबिक़ 14 जून, 1856 ईसवी को हुई। (मलफूज़ाते आला हज़रत, सफ़हा 63)

नाम

आप (رحمۃ اللہ علیہ) का मुबारक नाम मुहम्मद है, और आप के दादा ने अहमद रज़ा कह कर पुकारा और इसी नाम से मशहूर हुए।

(तज़्किरा इमाम अहमद रज़ा, सफ़हा 2)

अंदाज़े तालीम

आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ) खुद फरमाते हैं: मेरे उस्ताद जिन से मैं शुरुआती किताब पढ़ता था, जब मुझे सबक पढ़ा दिया करते, मैं एक दो बार देख कर किताब बंद कर देता, जब सबक सुनते तो हरफ ब हरफ लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ सुना देता। रोज़ाना येह हालत देख कर सख़्त तअज्जुब करते । एक दिन मुझ से फरमाने लगे: कि अहमद मियाँ! येह तो कहो तुम आदमी हो या जिन ? कि मुझ को पढ़ाते देर लगती है मगर तुम को याद करते देर नहीं लगती! मैंने कहा: अल्लाह पाक का शुक्र है मैं इंसान ही हूँ, हाँ! अल्लाह पाक का फज़्लो करम शामिल हाल है।

(हयाते आला हज़रत,जिल्द 1,सफ़हा 68, तज़्किरा इमाम अहमद रज़ा, सफ़हा 5)

एक रोज़ आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ)ने इर्शाद फरमाया कि कुछ ना जानने वाले हज़रात मेरे नाम के आगे हाफ़िज़ लिख दिया करते हैं, हालाँकि मैं इस लक़ब का अहल नहीं हूँ यानी मैं हाफ़िज़ नहीं हूँ,फिर कुछ मुद्दत के बाद फरमाया: मैंने कुराने पाक को तरतीब वार मेहनत से याद कर लिया और येह इसलिए कि उन अल्लाह के बंदों का (जो मेरे नाम के आगे हाफिज़ लिखा करते हैं) कहना गलत साबित न हो। किताबों में लिखा है कि आप ने एक महीने में हिफ़्ज़ मुकम्मल कर लिया । (हायाते आला हज़रत, जिल्द 1,सफ़हा208)

आलिम बनने का साल और फतवा लिखना

आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ) फरमाते हैं: मैंने जब पढ़ाई से फ़रागत पाई और मेरा नाम फ़ारिग़ होने वाले उलमा में गिना जाने लगा, तो 14 शबान 1286 हिजरी को इफ्ता यानी मुफ़्ती का मंसब दिया गया और उसी तारीख से नमाज़ फ़र्ज़ हुई। इफ्ता मिलने के वक़्त फकीर की उम्र 13 साल 10 महीने 4 दिन थी, तब से अब तक बराबर यही दीन की खिदमत ली जा रही है।

(तज़कराए जमील, सफ़हा 101, हयाते आला हज़रत,जिल्द 1,सफ़हा 279,280)

तर्बियत की मुद्दत

बद मज़हबों के रद्द और फतवा लिखने के बारे में फरमाते हैं: येह दोनों ऐसे फन हैं कि डाक्टरी की तरह येह भी सिर्फ पढ़ने से नहीं आते। इन में भी माहिर डाक्टर की सोहबत में रहने की ज़रूरत है। मैं भी एक माहिर उस्ताद, वलिदे माजिद, रईसुल मुताकल्लिमीन, मुफ़्ती नकी अली खान के मतब में सात साल बैठा, मुझे वो वक़्त, वो दिन, वो जगह, वो मसाइल और जहां से वह मसाइल आए थे, अच्छी तरह याद हैं।(मलफूजाते आला हज़रत,पेज 141)

शर्फे बैत

आप (رحمۃ اللہ علیہ)फरमाते हैं: मैं दोपहर को सोया तो (ख़्वाब में) हज़रत जद्दे अमजद (رحمۃ اللہ علیہ) तशरीफ लाए और एक संदूकची अता फरमाई और फरमाया: अनकरीब आने वाला है वह शख्स जो तुम्हारे दर्दे दिल की दवा करेगा। दूसरे या तीसरे दिन हज़रत मौलाना अब्दुल कादिर(رحمۃ اللہ علیہ) बदायूं से तशरीफ लाए और अपने साथ मारहरा शरीफ ले गए। वहां जा कर शाह आले रसूल मारहरवी (رحمۃ اللہ علیہ) से शर्फे बैत हासिल किया। (मलफ़ूज़ाते आला हज़रत,पेज 412)

पहला हज

आप (رحمۃ اللہ علیہ) फरमाते हैं: पहली बार की हाज़िरी माँ, बाप के साथ थी। उस वक़्त मेरी उम्र 23 साल थी ।(मलफ़ूज़ाते आला हज़रत,पेज,181)

दूसरा और आखिरी हज

आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ)फरमाते हैं: मदीना शरीफ़ की दोबारा हाज़िरी के वक़्त मेरी उम्र 51 साल 5 महीने थी। (मलफ़ूज़ाते आला हज़रत,पेज,205)

हरमे मक्का में इमामत

आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ)फरमाते हैं: दूसरी बार की हाज़िरी में मक्का के बड़े आलिम ह़नफी मज़हब के जैसे मौलाना शेख सालेह कामाल मुफ्तीए ह़नफी और मौलाना सैयद इस्माइल मुहाफिज़े कुतुबे हरम ह़नफी वक़्त पर अपनी जमाअत करते जिस में वह इस फकीर को इमामत पर मजबूर करते।

(मलफ़ूज़ाते आला हज़रत,पेज 84,हयाते आला हज़रत,जिल्द 1 ,पेज 399)

माँ की मुहब्बत

आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ)फरमाते हैं: दूसरे हज के लिए चलते वक़्त जिस बर्तन में मैंने वुज़ू किया था, वालिदा माजिदा ने उस का पानी मेरी वापसी तक न फेंकने दिया कि उस के वुज़ू का पानी है। (मलफ़ूज़ाते आला हज़रत,पेज,183)

अल्लाह के दुश्मनों से नफरत

आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ) फरमाते हैं: अल्लाह पाक के करम से मुझे बचपन से ही अल्लाह पाक के दुश्मनों से नफरत है और मेरे बच्चों को भी अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से उस के दुश्मनों से दुश्मनी घुट्टी में पिला दी गई है।

(मलफूज़ाते आला हज़रत,पेज 410)

माल और औलाद से मुहब्बत का मिआर

आला हज़रत(رحمۃ اللہ علیہ) फरमाते हैं: अल्लाह पाक के करम से मैंने माल (यानी इस तौर पर कि वह माल है) से कभी मुहब्बत ना रखी, सिर्फ अल्लाह पाक की राह में खर्च करने के लिए उस से मुहब्बत है। इसी तरह औलाद (इस तौर पर कि वह औलाद हैं) से भी मुहब्बत नहीं, सिर्फ इस लिए कि सिला रहमी नेक काम है और इस का सबब औलाद है और येह मेरी इख्तियारी बात नहीं, मेरी तबीयत का तकाज़ा है।(मलफ़ूज़ाते आला हज़रत,पेज 497)

खुदा और महबूबे खुदा की मुहब्बत

आला हज़रत(رحمۃ اللہ علیہ) फरमाते हैं: अल्लाह पाक के करम से अगर (मेरे) दिल के दो टुकड़े किए जाएं तो खुदा की कसम एक पर लिखा होगा "ला इलाहा इल्लल्लाह" दूसरे पर लिखा होगा "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहﷺ ।

(मलफ़ूज़ाते आला हज़रत, पेज 411)

अल्क़ाबात

आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ) के बेशुमार अलक़ाबात हैं,जिनमें से आप का मशहूर तरीन लक़ब "आला हज़रत" है ।और येह लक़ब आपकी ज़ात के साथ इस तरह ख़ास है कि जब भी आला हज़रत कहा, सुना जाता है, ज़ेहन फ़ौरन आप की तरफ़ ही जाता है। उलमाए अहले सुन्नत आपको और भी बे शुमार अलक़ाबात से याद करते हैं। आशिक़े आला हज़रत, शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादरी अपने रिसाले "तज़्किरा इमाम अहमद रज़ा" में आला हज़रत का ज़िक्रे ख़ैर बारह अलक़ाबात के साथ फ़रमाया है।

हुल्या मुबारक

आला हज़रत(رحمۃ اللہ علیہ)के भतीजे मौलाना हसनैन रज़ा ख़ान, आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ)के जमाले मुबारक का नक़्शा खींचते हुए कुछ यूँ फ़रमाते हैं: इब्तिदाई उम्र में आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ)का रंग चमकदार गंदुमी था,चेहरा मुबारक पर हर चीज़ निहायत मौज़ूं व मुनासिब थी, बुलंद पेशानी, नाक मुबारक पतली और ख़ुशनुमा थी, दोनों आँखें बहुत ख़ूबसूरत थीं, निगाह में क़दरे तेज़ी थी, दाढ़ी बड़ी ख़ूबसूरत थी, सर मुबारक पर ज़ुल्फ़ें कान की लौ तक थीं, सर मुबारक पर हमेशा इमामा शरीफ़ सजा रहता था, आप का सीना मुबारक बावजूद कमज़ोरी के ख़ूब चौड़ा महसूस होता था, गर्दन सुराही दार और बुलंद थी, आप (رحمۃ اللہ علیہ)का क़द दरमियाना था,हर मौसम में सिवाए मौसमी लिबास के आप सफ़ैद कपड़े ही ज़ेबे तन फरमाते, आप की आवाज़ निहायत पुर दर्द थी और किसी क़दर बुलंद भी

थी, जब अज़ान देते तो सुनने वाले हमा तन गोश हो जाते, आप (رحمۃ اللہ علیہ)ने हमेशा हिन्दुस्तानी जूता पहना जिसे सलीम शाही जूता भी कहते हैं,आपकी रफ़्तार ऐसी नरम कि बराबर के आदमी को भी क़दमों की चाप महसूस ना होती थी।

(مجدد اسلام از علامہ نسیم بستوی مطبوعہ لاہور ص ۳۲، ۳۳،بتغیر)

लेकिन कमाल येह कि हमेशा नज़रें नीची रखते थे। कभी किसी की आँखों में आँखें डाल कर ना देखते।

(امام احمد رضا اور ردِ بدعات و منکرات از یسن اختر مصباحی مطبوعہ فرید بک سٹال لاہور ص ۲۰۰ از فیضانِ اعلیٰ حضرت، ص ۸۴)

अपने इंतिक़ाल की खबर

आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ) ने अपनी मौत से 4 महीने 22 दिन पहले अपने विसाल की खबर दे कर पारा 29 सूरहए दहर की आयत नंबर15 से इंतकाल का साल निकाला। इस आयत के इल्मे अबजद के मुताबिक 1340 गिनती बनती है और यही हिजरी साल के ऐतिबर से वफ़ात का साल है। वह आयत येह है:

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّ اَكْوَابٍ

तर्जमा: और उन पर चाँदी के बर्तनों और कूज़ों का दौर होगा। (पारा 29, दहर: 15)

(सवानेह इमाम अहमद रज़ा,पेज 384, वसाया शरीफ,पेज 25)

विसाल मुबारक

25 सफरुल मुजफ्फर 1340 हिजरी, मुताबिक 28 अक्टूबर 1921 को जुमे के रोज़ हिंदुस्तान के वक़्त के मुताबिक 2 बज कर 38 मिनट पर, ठीक जुमे की अज़ान के वक़्त, आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान (رحمۃ اللہ علیہ) का विसाल हुआ। आप (رحمۃ اللہ علیہ) का मज़ारे पुर अनवार मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़ में आज भी ज़ियारत गाह खासो आम है। (तज़करा इमाम अहमद रज़ा,पेज 18)

तुम क्या गए कि रौनके महफिल चली गई
शेअरो अदब की ज़ुल्फ़ परेशां है आज भी

मुरत्तिब का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम मुहम्मद शफीक़ खान,वालिद का नाम मुहम्मद शरीफ खान है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अ़त्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी रज़वी से 2004 ईसवी में बैअ़त होने की वजह से अपने नाम के साथ अ़त्तारी लिखते है, आपकी विलादत क़स्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश 10 जून 1986 ईसवी है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सिन 2000 ईस्वी में ऐ. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर 4 साल क़ियाम किया फिर 2004 ईस्वी में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौ़ल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ कोर्सेज़ किये और 2006 ईस्वी में अपने ही इलाके के दारुल उ़लूम बनाम जामिया अ़रबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में क़ारी इक़बाल अहमद अ़त्तारी से क़ुरआने पाक नाज़िरा और ह़ज़रत मौलाना अ़तीक़ुर्रह़मान मिस्बाही से दर्से निज़ामी के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये चिरैयाकोट जिला मऊ तशरीफ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इल्मी इदारे अल जामिअ़तुल अशरफिया मुबारकपुर आ'ज़मगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उ़लूम ग़ौसिया (जो जिला आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ़ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना, फैज़ाने अ़त्तार नेपालगंज,नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए ह़दीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फराग़त के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर,आगरा तशरीफ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअ़तुल मदीना तशरीफ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिअ़ात के दरजए सानिया में चलने वाली इ़ल्मे सर्फ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह़ शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिअ़ा में चलने वाली इ़ल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह़ अश शफीकुन नोअमानी तसनीफ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली ह़दीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविया की उर्दू शरह़ शफ़ीकिया तह़रीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफात का सिल्सिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 35 किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईसवी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिए आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी ने सिलसिलए कादरिया, रज़्विया की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

अल्लाह पाक से दुअ़ा है कि मौसूफ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फे क़बूलियत अ़ता करके मौसूफ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

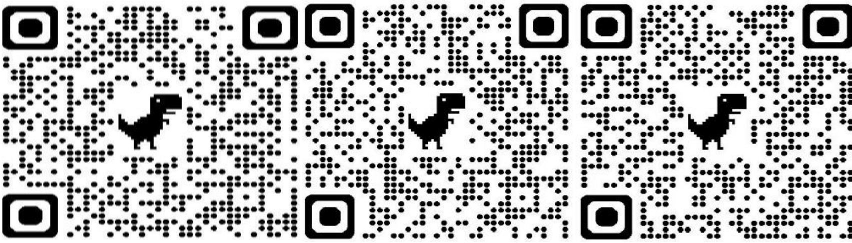
अज़ :- अल आजिज़ मुह़म्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मौलाना अबू शफ़ी मुहम्मद शफ़ीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी की किताबों को डाउनलोड करने का बार कोड

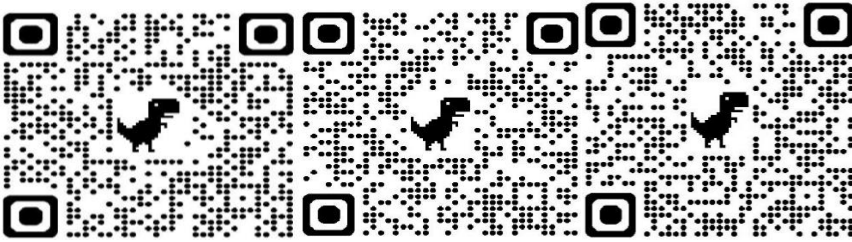
آسان خطباتِ محرم | عقائد کی حکمتیں | ۵ نمازوں کی حکمتیں



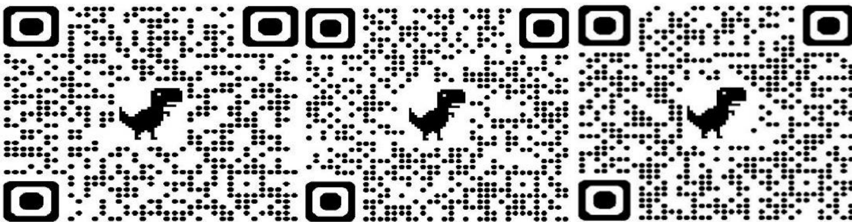
آسان فرض علوم | تدریس کے ۲۶ طریقے | رفیق التدریس



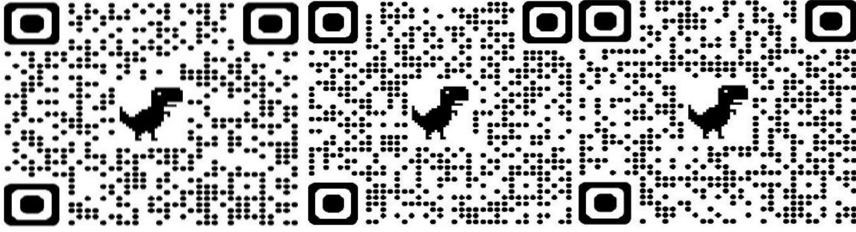
صرف کے دلچسپ سوالات | قصور کس کا؟ ہندی | شَارِقُ الْفَلَاح شَرح نُورُ الْاِیْضَاح



شَفِیْقُ الْمِصْبَاح شَرح مَرَاحُ الْاَرْوَاح | تنظیمی نصاب و بیانات | نصاب مسائلِ نماز



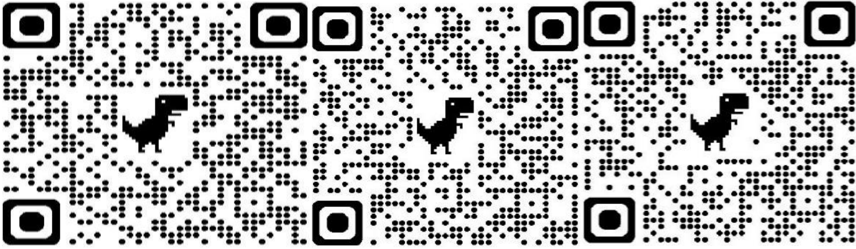
اَلْقَوْلُ الْاَظْهَر شَرْح اَلْفِقْه الْاَکْبَر　　اعلیٰ حضرت کا چرچا رہے گا　　فیضانِ قرآن کورس



امتِ محمدیہ کے سوالات　　چاند کی گواہی　　خطباتِ مصطفائی حصہ دوم



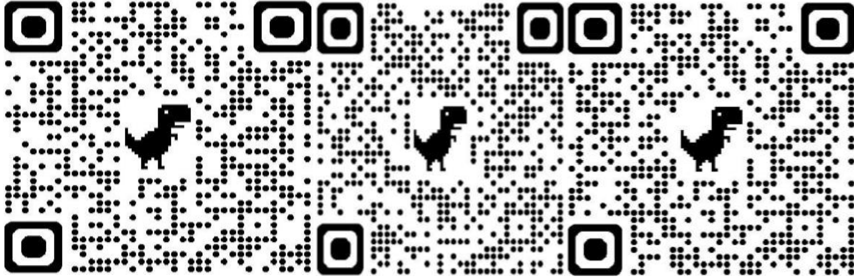
مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِكَ ؟　　میری سنت میری امت　　شفیقیہ شرح الاربعین النوویہ



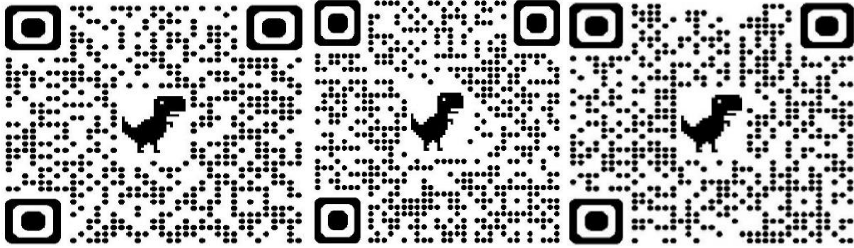
سب سے پہلے سب سے آخر　　قرآنی سورتوں کے مضامین　　تاریخ ساز شخصیت بننے کے فارمولے



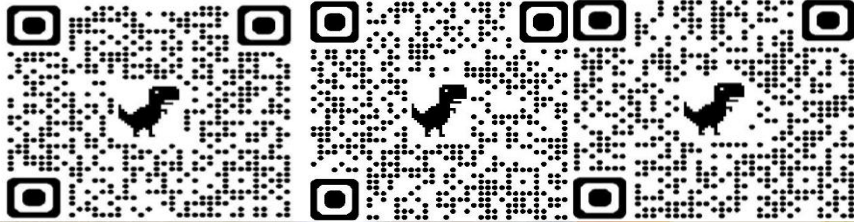
درود کی حکمتیں　　کیا حال ہے؟　　فیضان شریعت کورس



موت کے وقت　　محمد اور احمد کے اسرار　　دینِ اسلام کی خوبیاں



اسرار الایمان فی حقائق الارکان　　خطباتِ شفیقی جلد اول　　تمام کتب ڈاون لوڈ کرنے کا بار کوڈ





दुरूद शरीफ़ की अनोखी फ़ज़ीलत

ऐ आशिक़ाने रसूल!अल्हम्दु लिल्लाह हम ईमान वाले हैं और अल्लाह पाक अपने पाकीजा कलाम कुराने पाक में ईमान वालों के बारे में फरमाता है:

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ﴿۱۳۹﴾ (پ۴، آل عمران، ۱۳۹)

तर्जमा कंज़ुल ईमान: और न सुस्ती करो और न ग़म खाओ, तुम ही गालिब आओगे अगर ईमान रखते हो।

यानी अल्लाह पाक ने इस आयत में ईमान वालों के लिए कामयाबी और सलामती की बिशारत दी है, लेकिन इसके बावजूद अगर हम मुसलमानों का जायजा लें तो पता चलता है कि हर एक को तरह तरह की परेशानियों का सामना है, कोई बीमार है तो कोई कर्ज़दार, कोई घरेलू झगड़ों का शिकार है तो कोई तंगदस्तों बेरोजगार, कोई औलाद का तलबगार है तो कोई नाफरमान औलाद की वजह से परेशान, कुल मिलाकर हर कोई किसी न किसी मुसीबत में है। किसी का बाप बीमार है तो किसी की माँ, किसी की बीवी बीमार है तो किसी की औलाद, ऐसा लगता है कि बीमारियों, मुसीबतों, आफतों और बलाओं ने हमारे घरों पर डेरा जमा रखा है।

ऐसे हालात में हर किसी की तमन्ना है कि मुझे इन सभी परेशानियों से, मुसीबतों से, बालाओं से, तकलीफों से छुटकारा मिल जाए और बस खुशहाली वाली, सलामती वाली ज़िंदगी मिल जाए, लेकिन सलामती कैसे मिले ?

अब यहाँ पर मैं आप से एक बात पूछता हूँ कि आप मुझे बताएं कि अगर आपके लिए अल्लाह पाक का कोई वली सलामती की दुआ कर दे तो क्या आप मुतमइन नहीं हो जाएंगे कि अब मेरी परेशानियाँ दूर हो जाएंगी और मुझे सलामती मिलेगी, क्यों ? क्योंकि अल्लाह के वली ने सलामती की दुआ की है।

और अल्लाह पाक ने अपने औलिया को यह ताकत भी दी है कि जिस के लिए दुआ कर दें, उसका बेड़ा पार हो जाता है, इसी लिए हम कहते हैं:

हम को तो हर एक वली से प्यार है
इंशा अल्लाह अपना बेड़ा पार है

और यह शेअर भी आपने बार बार सुना होगा:

निगाहे वली में येह तासीर देखी
बदलती हजारों की तक़दीर देखी

ऐ आशिकाने औलिया! किसी परेशान हाल के हक में अल्लाह का वली दुआ कर दे तो उसकी परेशानी दूर हो जाए, उसे तमाम ग़मों से सलामती मिल जाए, उसकी तक़दीर बदल जाए। इसी के साथ एक बात और कह दूं कि अल्लाह पाक ने वलियों से बड़ा मर्तबा नबियों का रखा है, अगर कोई नबी किसी के हक में सलामती की दुआ कर दे तो अब क्या ख़्याल है, उसकी परेशानी, परेशानी रहेगी? उसकी मुसीबत मुसीबत रहेगी? आप कहेंगे कि जनाब तब तो कमाल हो जाएगा, अगर किसी नबी ने दुआ कर दी तो उसकी ज़िंदगी में खुशियाँ ही खुशियाँ होंगी।

अब एक कदम और आगे बढ़िए, अगर नबियों के नबी, अल्लाह पाक के आखिरी नबी, मुहम्मदे अरबी ﷺ दुआ कर दें तो! अल्लाह अकबर! आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं:

ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल
और रसूलों से आला हमारा नबी

जिनका मरतबा सबसे ऊँचा और आला है, जो ख़ुदा के महबूब हैं, सारी कायनात रब की रिज़ा चाहती है कि मुझ से मेरा रब राज़ी हो जाए और रब जिसकी रिज़ा चाहता है उस के मकाम और मर्तबे का कौन अंदाज़ा लगा सकता है, आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं:

खुदा की रिज़ा चाहते हैं दो आलम
खुदा चाहता है रिज़ाए मोहम्मद

और आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के भाई जान, मौलाना हसन रज़ा खान, रहमतुल्लाह अलैह अपने नातिया दीवान, ज़ौक़े नात में इसी बात को कुछ यूं बयान करते हैं:

खुदाए पाक की चाहेंगे अगले पिछले खुशी
खुदाए पाक खुशी उन की चाहता होगा

जो मक़सूदे कायनात हैं भला उनकी दुआ कब रद्द हो सकती है? अल्लाह पाक ने उन्हें सारे अधिकार दे दिए, अब महबूब ﷺ जो चाहें, जिसे चाहें दें, खलिके कुल ने उन्हें मालिके कुल बना दिया।

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूबो मुहिब में नहीं मेरा तेरा

अब आखिरी बात बताइए कि अल्लाह पाक के बाद मखलूक में सबसे बड़ा रुतबा रसूलुल्लाह ﷺ का है और रसूलुल्लाह ﷺ से बड़ा रुतबा किसका है? यकीनन अल्लाह पाक का है, वही मालिक और खालिक है, जिंदगी और मौत देने वाला है, जिसे चाहे गरीब कर दे, जिसे चाहे अमीर कर दे, जिसे चाहे राहत दे और जिसे चाहे आफतो बला में मुब्तला कर दे। वलियों, नबियों की दुआओं से लोगों को सलामतियाँ मिलती हैं, लेकिन अगर अल्लाह पाक किसी से कह दे: जा बंदे, तेरे लिए सलामती है, तो क्या ख्याल है, दुनिया उसके लिए जन्नत न बन जाएगी? यकीनन बन जाएगी।

लेकिन आप सवाल करेंगे कि जनाब हमारी क्या हैसियत कि अल्लाह पाक हम से फरमाए कि जा बंदे तेरे लिए सलामती है, हमारी आँखों में न वो ताकत कि उसे देख सकें, न हमारी येह हिम्मत कि हम उसे सुन सकें, फिर येह क्योंकर मुमकिन है ?

ऐ आशिक़ाने रसूल! मैं आपसे कहूँगा कि हमने आज अपने नबी ﷺ का दर छोड़ दिया है जिस की वजह से हम परेशान हैं, अगर मुस्तफा ﷺके दर पर जमे रहते तो येह ना मुरादी के दिन न देखने पड़ते, क्योंकि

वह जो इस दर का हुआ ख़ल्क़े ख़ुदा उस की हुई
वह जो इस दर से फिरा अल्लाह उस से फिर गया

अल्लाह अकबर! ऐ आशिक़ाने रसूल! आइए मैं आपको एक आसान सा वज़ीफा बताता हूँ जिस से अल्लाह पाक आप पर सलामती नाज़िल फरमाएगा और जब अल्लाह पाक की सलामती नाज़िल होगी तो सारी परेशानियाँ दूर हो जाएँगी, इंशा अल्लाह।

मुसनद अहमद बिन हम्बल की हदीसे पाक है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फरमाया: बेशक जिबरील (علیہ السلام)ने मुझे बिशारत दी कि:

اِنَّ اللّٰہَ یَقُوْلُ : مَنْ صَلّٰی عَلَیْكَ صَلَّیْتُ عَلَیْہِ وَ مَنْ سَلَّمَ عَلَیْكَ سَلَّمْتُ عَلَیْہِ۔

तर्जमा:अल्लाह पाक इरशाद फ़र्माता है: जो आप पर दुरूद पढ़ता है, उस पर मैं रहमत भेजता हूँ और जो आप पर सलाम पढ़ता है, उस पर मैं सलामती भेजता हूँ। (मुसनद अहमद बिन हम्बल, जिल्द 1,पेज 407, हदीस 1664)

अल्लाहु अकबर! कितना आसान वज़ीफ़ा है कि खुद अल्लाह पाक जिबरीले अमीन को अपने महबूब ﷺ की बारगाह में भेज कर बिशारत दे रहा है कि जो मेरी सलामती लेना चाहता है वह रसूलुल्लाह ﷺ पर सलाम पढ़े, उस पर मैं सलामती भेजूंगा।

यहाँ पर एक सवाल उठता है कि रब का तो कुरआने पाक में फरमान है:

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا۔ (پ۸، سورۂ انعام)

कि अल्लाह पाक बंदों को एक का दस अता फरमाता है लेकिन यहाँ पर बंदा एक बार सलाम पढ़े तो अल्लाह पाक भी एक बार सलामती भेजता है, येह कैसे? जबकि होना येह चाहिए कि बंदा एक बार सलाम पढ़े तो अल्लाह पाक उस पर दस बार सलामती भेजे । मैं इस बात पर गौर करता रहा, बिल आख़िर सुनने नसाई की एक हदीसे पाक पर नज़र गई कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फरमाया:

جَاءَنِیْ جِبْرِیْلُ فَقَالَ یَا مُحَمَّدُ اِنَّ رَبَّكَ یَقُوْلُ اَمَا یُرْضِیْكَ یَا مُحَمَّدُ اَنْ لَا یُصَلِّیَ عَلَیْكَ اَحَدٌ

مِّنْ اُمَّتِكَ اِلَّا صَلَّیْتُ عَلَیْہِ عَشْرًا وَ لَا یُسَلِّمَ عَلَیْكَ اَحَدٌ مِّنْ اُمَّتِكَ اِلَّا سَلَّمْتُ عَلَیْہِ عَشْرًا

तर्जमा:जिबरील ने मुझ से कहा कि अल्लाह पाक फरमाता है: ऐ मुहम्मद! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं, कि तुम्हारा उम्मती तुम पर एक बार दुरूद भेजे तो मैं उस पर दस बार रहमत भेजूं, और जो तुम्हारा उम्मती तुम पर एक बार सलाम भेजे मैं उस पर दस सलाम भेजूं।(सुनने नसाई पेज 222, हदीस 1292) (ज़ियाए दुरूदो सलाम पेज 3)

विर्द जिसने किया दुरूद शरीफ
और दिल से पढ़ा दुरूद शरीफ
हाजतें सब रवां हुईं उसकी
है अजब कीमिया दुरूद शरीफ

ऐ आशिक़ाने रसूल! अल्लाह पाक का कितना करम है कि हम एक बार अपने नबी ﷺ पर सलाम भेजें तो वह हम पर दस सलामती नाज़िल फरमाए, दस बार सलाम भेजें तो सौ सलामती नाज़िल फरमाए और जो सौ बार सलाम भेजे, उस पर एक हज़ार सलामती नाज़िल फरमाए, और जिस पर अल्लाह पाक की सलामती नाज़िल हो रही हों, आप ईमान से कहिएगा: क्या वह परेशान रहेगा? बीमार रहेगा? तंगदस्त रहेगा? मुसीबतों से दो चार रहेगा? नहीं और यकीनन नहीं, क्यों? क्योंकि अल्लाह पाक की सलामतियों के होते हुए मुसीबतों, परेशानियों, बीमारियों, आफतों, बलाओं का क्या काम।

अल्लाह अकबर! **ऐ आशिक़ाने रसूल!** मेरा ईमान है दुनिया का सबसे ज़्यादा सताया हुआ इंसान, मुसीबतों में जिंदगी बसर करने वाला इंसान,इंतिहाई दर्जे का तंगदस्त और बदहाल हो, और अगर उस पर मेरे रब की सिर्फ एक सलामती नाज़िल हो जाए तो वह दुनिया का सबसे ज़्यादा खुशहाल इंसान हो जाएगा। लेकिन यहाँ तो एक बार नबी ﷺ पर सलाम भेजने से रब की दस सलामतियाँ नाज़िल हो रही हैं। और अगर मैं बात करूँ आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के सलाम की, कि जब आपने नबी ﷺ की बारगाह में अर्ज़ किया:

मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमअे बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

तो गोया आपने नबी पर लाखों सलाम भेज दिया और लाखों का मतलब है एक करोड़ से एक कम, यानी 99 लाख, 99 हजार, 9 सौ, 99, येह पहले मिसरे का हुआ और इतना ही दूसरे मिसरे का तो दोनों मिला कर 2 करोड़ में 2 कम, यानी 1 करोड़, 99 लाख, 99 हजार, 9 सौ, 98, बार सलाम भेजा और रब एक के

बदले 10 अता फरमाता है तो इसका दस गुना 19, करोड़, 99 लाख, 99 हजार, 9 सौ,80 हुआ।

अब आप बताइए जो शख्स सुब्ह सवेरे उठ कर आला हजरत रहमतुल्लाह अलैह के लिखे हुए सलाम के दो मिसरे:

मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमअे बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

पढ़ ले और उसकी वजह से उस पर अल्लाह पाक की (19,99,99,980) सलामतियां नाज़िल हो जाएं तो वह परेशान होगा ? तंगदस्त होगा ? यकीनन नहीं होगा। इसलिए आज से नीयत कीजिए कि सुब्ह उठकर सलाम के येह दो मिसरे जरूर पढ़ेंगे। इंशा अल्लाह

मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमअे बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

ऐ आशिक़ाने रसूल!अल्लाह पाक हमारे आला हज़रत, इमामे इश्क़ो मुहब्बत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान रहमतुल्लाह अलैह के मजारे पुर अन्वार पर करोड़ों रहमतो नूर की बारिश फरमाए कि उन्होंने कम वक़्त में अल्लाह पाक की ज़्यादा से ज़्यादा सलामतियाँ हासिल करने का कितना शानदार सलाम अता फरमाया। येह तो सिर्फ एक शेअर का हाल है पूरे सलाम का हाल क्या होगा ?

मुझ से खिदमत की क़ुद्सी कहें हां रज़ा
मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम

सल्लू अलल हबीब सल्लल्लाहु अला मुहम्मद

इल्मे तक़वीम का हल ना होने वाला मसला

ऐ आशिक़ाने रज़ा! यूं तो इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैह के ऐसे बेशुमार कारनामे हैं जिनकी वजह से इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैह को **"आला हज़रत"** के लक़ब से याद किया जा सकता है जिनका बयान सगे अत्तार की किताब **"आला हज़रत की तहक़ीक़ात"** में बयान किया गया है, उन्ही कारनामों में से एक येह भी है कि जब भी इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में ना हल होने वाला कोई मसला पेश किया जाता आप रहमतुल्लाह अलैह उस मसले को दम भर में हल फ़रमा देते और यूं महसूस होता कि वह मसला कोई ज़्यादा मुश्किल था ही नहीं।

ऐसे ही एक मसला इल्मे तक़वीम और अहादीसे मुबारका का था जो सहाबाए किराम के दौर के बाद से आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के दौर तक अहादीस और इल्मे तक़वीम के दर्मियान इख़्तिलाफ़ी मसला रहा जिसके हल के बारे में बड़े बड़े अकाबिर उलमा यूं कहते हुए नज़र आए कि अगर अहादीस को सच्चा मानें तो इल्मे तक़वीम के क़ाएदे ग़लत होंगे और अगर इल्मे तक़वीम के क़ाएदों को सच्चा मानें तो अहादीस ग़लत क़रार पाऐंगीं, लेकिन हम हदीसों को ग़लत क़रार दे नहीं सकते लिहाज़ा इल्मे तक़वीम के क़ाएदों को ही ग़लत क़रार देंगे क्योंकि वो ख़ुद से बनाए हुए क़यासी हैं।

लेकिन जब हमारे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैह का मुबारक दौर आया तो आपने ऐसी तहक़ीक़ बयान फ़रमाई जिसकी रोशनी में अहादीस के साथ साथ इल्मे तक़वीम के क़ाएदे भी सच्चे हो गए और सदीयों से ना हल होने वाला मसला ऐसा लगने लगा गोया कि इस में कोई मुश्किल चीज़ थी ही नहीं।

वह मसला येह है

ऐ आशिक़ाने रज़ा! यक़ीनन आप सोच रहे होंगे कि आख़िर वो कौन सा मसला है जो सदियों से अहादीस और इल्मे तक़वीम के दर्मियान इख़्तिलाफ़ी मसला रहा?

ऐ आशिक़ाने रज़ा! वो मसला हमारे नबी, प्यारे नबी, अल्लाह पाक के आख़िरी नबीﷺ के ज़ाहिरी वफ़ात के दिन और तारीख़ का है चुनांचे:

सवाल:आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहि रहमा से सवाल हुआ: क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन इस मसला में कि हुज़ूर (ﷺ) की वफ़ात शरीफ़ की तारीख़ क्या है ?

जवाब:आला हज़रत अलैहि रहमा ने जवाब देते हुए इरशाद फ़रमाया: मशहूर क़ौल 12 रबीउल अव्वल शरीफ़ है, इब्ने साद ने तबक़ात में अलीयुल मुर्तज़ा रज़ी अल्लाहु अन्हु से रिवायत की:

قَالَ مَاتَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ لِاثْنَتَيْ عَشَرَةَ مَضَتْ مِنْ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ۔

तर्जमा: हुज़ूर अक़्दस (ﷺ) की वफ़ात शरीफ़ रोज़ दो शंबा (यानी पीर के दिन 12 वीं तारीख़ रबीउल अव्वल शरीफ़ को हुई।

(الطبقات الکبرٰی ابن سعد ذکر کم مرض رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم الخ دار صادر بیروت ۲/ ۲۷۲)

खमीस फी अहवालि अनफुसे नफीस नामी किताब में है :

تُوُفِّیَ ﷺ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ نِصْفَ النَّهَارِ لِاثْنَتَيْ عَشَرَةَ لَيْلَةً خَلَتْ مِنْ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ سَنَةَ اِحْدٰى عَشَرَةَ مِنَ الْهِجْرَةِ ضُحًى فِيْ مِثْلِ الْوَقْتِ الَّذِيْ دَخَلَ فِيْهِ الْمَدِيْنَةَ۔

तर्जमा: रसूलुल्लाह (ﷺ) का विसाल मुबारक 12 रबीउल अव्वल शरीफ़ 11 हिजरी बरोज़ पीर दोपहर के वक़्त हुआ जिस वक़्त आप(ﷺ) मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुए थे।

(تاریخ الخمیس فی احوال انفس نفیس ذکر وقت موتہ علیہ السلام موسسۃ شعبان بیروت ۲/ ۱۶۲)

और इमाम अबू हातिम राज़ी, इमाम रज़ीन अबदरी, इमाम इब्ने जौज़ी से मांकुल है :

مَرِضَ فِيْ صَفَرَ لِعِشْرِيْنَ مِنْهُ وَتُوُفِّیَ ﷺ لِاثْنَتَيْ عَشَرَةَ لَيْلَةً خَلَتْ مِنْ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ۔

तर्जमा:हुज़ूर पुरनूर (ﷺ) 20 सफ़र को बीमार हुए और 12 रबीउल अव्वल पीर के रोज़ आप का विसाल हुआ।

(تاریخ الخمیس ابتداء مرضہ علیہ الصلوٰۃ والسلام مؤسسۃ شعبان بیروت ۲/۱۶۱)

कामिल इब्ने असीर जज़री में है:

كَانَ مَوْتُهُ ﷺ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ لِثِنْتَىْ عَشَرَةَ لَيْلَةً خَلَتْ مِنْ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ۔

तर्जमा:हुज़ूर(ﷺ)का विसाल 12 रबीउल अव्वल पीर के रोज़ हुआ।

(الکامل فی التاریخ ابن اثیر ذکر مرض رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم دار صادر بیروت ۲/۳۲۳)

मजमा बिहारुल अनवार में है:

وَصَلَ بِالْحَقِّ فِىْ نِصْفِ نَهَارِهٖ لِاِثْنَىْ عَشَرَ مِنْ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ۔

तर्जमा:रसूलुल्लाह ﷺ 12 रबीउल अव्वल को वासिले ब हक़ हुए।

(مجمع بحار الانوار فصل فی السیر من سیر نا المختصر فی سبب قدوم الحبشہ الخ مکتبہ دار الایمان المدینۃ المنورہ ۵/۲۹۴)

इन अक़्वाल को नक़्ल करने के बाद आला हज़रत अलैहि रहमा फ़रमाते हैं: इस मक़ाम की तफ़सील येह है कि वफ़ात शरीफ़ माहे रबीउल अव्वल, रोज़ दो शंबा (यानी पीर में हुई, येह तारीख इस क़दर साबित यक़ीनी है जिसमें बिल्कुल भी झगड़े की जगह नहीं। फ़तहुल बारी शरह सहीहुल बुख़ारी में है:

ثُمَّ اِنَّ وَفَاتَهُ ﷺ فِىْ يَوْمِ الْاِثْنَيْنِ كَمَا ثَبَتَ فِى الصَّحِيْحِ عَنْ اَنَسٍ وَرَوَاهُ ابْنُ سَعْدٍ بِاَسَانِيْدِهٖ عَنْ عَائِشَةَ وَعَلِيٍّ وَسَعْدٍ وَعُرْوَةَ وَابْنِ الْمُسَيِّبِ وَابْنِ شِهَابٍ وَغَيْرِهِمْ: مِنْ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ بِلَاخِلَافٍ۔ كَمَا قَالَ ابْنُ عَبْدِ الْبَرِّ، بَلْ كَادَ يَكُوْنُ اِجْمَاعًا۔

तर्जमा:फिर हुज़ूर(ﷺ)का विसाल पीर के रोज़ है ,जैसा कि हज़रते अनस (رضی اللہ عنہ) से साबित है। और रबीउल अव्वल में विसाल मुबारक के होने में कोई इख्तिलाफ़ नहीं। (المواہب اللدنیۃ آخر البعوث النبویۃ المکتب الاسلامی بیروت ۱/۲۶۹)

इल्मे तक़वीम के ऐतिबार से

लेकिन इल्मे तक़वीम के ऐतिबार से रसूलुल्लाहﷺ का विसाले ज़ाहिरी 12 रबीउल अव्वल, पीर के दिन नहीं हुआ क्योंकि येह बात सब को मालूम है कि हज्जतुल वदाअ 9 ज़िल हिज्जा, जुमा के दिन हुआ है। और जब 9 ज़िल हिज्जा, जुमा के दिन थी तो ज़िल हिज्जा की पहली तारीख़ जुमेरात को होगी।

तीनों महीने 30 के

अब अगर तीनों महीने (यानी ज़ुलहिज्जा, मुहर्रम, सफ़र 30,30 के लें तो 12 रबीउल अव्वल इतवार के दिन होगी जैसा कि नक़्शा में देखें:

ज़ुल हिज्जा 10 हिजरी

जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
1	2	3	4	5	6	**7**
8	**9**	10	11	12	13	**14**
15	16	17	18	19	20	**21**
22	23	24	25	26	27	**28**
29	30					

मुहर्रम 11 हिजरी

जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
		1	2	3	4	**5**
6	7	8	9	10	11	**12**
13	14	15	16	17	18	**19**
20	21	22	23	24	25	**26**
27	28	29	30			

सफर 11 हिजरी						
जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
				1	2	**3**
4	5	6	7	8	9	**10**
11	12	13	14	15	16	**17**
18	19	20	21	22	23	**24**
25	26	27	28	29	30	

रबीउल अव्वल 11 हिजरी						
जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
						1
2	3	4	5	6	7	**8**
9	10	11	12	13	14	**15**

दो महीने 30 के और एक महीना 29 का

और अगर दो महीने (यानी ज़ुलहिज्जा, मुहर्रम 30 के लें और एक महीना 29 का लें तो 12 रबीउल अव्वल सनीचर के दिन होगी जैसा कि नक़्शा में देखें:

ज़ुल हिज्जा 10 हिजरी						
जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
1	2	3	4	5	6	**7**
8	9	10	11	12	13	**14**
15	16	17	18	19	20	**21**
22	23	24	25	26	27	**28**
29	30					

मुहर्रम 11 हिजरी

जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
		1	2	3	4	**5**
6	7	8	9	10	11	**12**
13	14	15	16	17	18	**19**
20	21	22	23	24	25	**26**
27	28	29	30			

सफर 11 हिजरी

जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
				1	2	**3**
4	5	6	7	8	9	**10**
11	12	13	14	15	16	**17**
18	19	20	21	22	23	**24**
25	26	27	28	29		

रबीउल अव्वल 11 हिजरी

जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
					1	**2**
3	4	5	6	7	8	**9**
10	11	12	13	14	15	**16**

एक महीना 30 का और दो महीने 29 के

और अगर एक महीना (यानी ज़ुलहिज्जा 30 का लें और दो महीने(यानी मुहर्रम, सफ़र 29 का लें तो 12 रबीउल अव्वल जुमा के दिन होगी जैसा कि नक़्शा में देखें:

ज़ुल हिज्जा 10 हिजरी						
जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
1	2	3	4	5	6	**7**
8	9	10	11	12	13	**14**
15	16	17	18	19	20	**21**
22	23	24	25	26	27	**28**
29	30					

मुहर्रम 11 हिजरी						
जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
		1	2	3	4	**5**
6	7	8	9	10	11	**12**
13	14	15	16	17	18	**19**
20	21	22	23	24	25	**26**
27	28	29				

सफर 11 हिजरी						
जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
			1	2	3	**4**
5	6	7	8	9	10	**11**
12	13	14	15	16	17	**18**
19	20	21	22	23	24	**25**
26	27	28	29			

रबीउल अव्वल 11 हिजरी						
जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
				1	2	**3**
4	5	6	7	8	9	**10**
11	12	13	14	15	16	**17**

तीनों महीने 29 के

और अगर तीनों महीने (यानी ज़ुलहिज्जा, मुहर्रम, सफ़र 29,29 के लें तो 12 रबीउल अव्वल जुमेरात के दिन होगी जैसा कि नक़्शा में देखें:

ज़ुल हिज्जा 10 हिजरी						
जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
1	2	3	4	5	6	**7**
8	9	10	11	12	13	**14**
15	16	17	18	19	20	**21**
22	23	24	25	26	27	**28**
29						

मुहर्रम 11 हिजरी

जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
	1	2	3	4	5	**6**
7	8	9	10	11	12	**13**
14	15	16	17	18	19	**20**
21	22	23	24	25	26	**27**
28	29					

सफर 11 हिजरी

जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
		1	2	3	4	**5**
6	7	8	9	10	11	**12**
13	14	15	16	17	18	**19**
20	21	22	23	24	25	**26**
27	28	29				

रबीउल अव्वल 11 हिजरी

जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
			1	2	3	**4**
5	6	7	8	9	10	**11**
12	13	14	15	16	17	**18**

पीर के दिन 12 तारीख़ नहीं

पस अगर ज़ुलहिज्जा, मुहर्रम, सफ़र तीनों महीने 30 के लिए जाएं तो रबीउल अव्वल की पहली तारीख़ बुध के रोज़ होगी और पीर के दिन 6, और 13 तारीख़ होगी।

और अगर तीनों 29 के लें तो रबीउल अव्वल की पहली तारीख़ इतवार को होगी और पीर के दिन 2 और 9 तारीख़ होगी।

और अगर उन में कोई सा एक 29 का और बाक़ी दो 30 के लीजिए तो रबीउल अव्वल की पहली तारीख़ मंगल के दिन होगी और पीर के दिन 7 और 14 तारीख़ होगी।

और अगर एक महीना 30 का और दो महीने 29 के लीजिए तो रबीउल अव्वल की पहली तारीख़ पीर के दिन होगी है फिर पीर के दिन 8 और 15 तारीख़ होगी।

ग़रज़ पीर के दिन 12 तारीख किसी हिसाब से नहीं आती, और उन चार सूरतों के इलावा पांचवीं कोई सूरत नहीं।

पस अगर इल्मे तक़वीम की बात मानें तो वह अहादीस दुरुस्त नहीं होंगी जिन में बयान किया गया कि रसूलुल्लाह ﷺ का ज़ाहिरी विसाल 12 रबीउल अव्वल पीर के दिन हुआ। जब कि तमाम उलमाए किराम का यही क़ौल है यानी वफ़ात शरीफ़ 12 रबीउल अव्वल पीर के दिन हुई।

सबसे पहले ऐतिराज़ किस ने किया?

तमाम उलमा के क़ौल पर येह ऐतिराज़ सबसे पहले इमाम सुहैली के ख़्याल में आया और उसे ना हल होने वाला मसला समझ कर उन्हों ने 12 रबीउल अव्वल इतवार के दिन का क़ौल किया है और इमाम इब्ने हजर अस्कलानी ने 12 रबीउल अव्वल सनीचर के दिन होने का क़ौल किया है। जैसा कि मवाहिबुल लदुन्नियह में है:

सुहैली ने तमाम उलमा के क़ौल पर ऐतिराज़ वारिद किया है वह येह है कि उलमा ज़ुलहिज्जा के जुमेरात को शुरू होने पर मुत्तफ़िक़ हैं क्योंकि वुक़ूफ़े अर्फ़ा

बरोज़ जुमा होने पर सब मुत्तफ़िक हैं। तो अब अगर तीनों महीने यानी ज़ुलहिज्जा, मुहर्रम, सफ़र कामिल यानी 30,30 दिन के मानें जाएं या तीनों नाक़िस यानी 29,29 दिन के मानें जाएं या बाज़ 30 के और बाज़ 29 के मानें जाएं, किसी सूरत में येह सही ना होगा कि 12 रबीउल अव्वल शरीफ़ पीर के दिन हो। हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्कलानी अलैहि रहमा ने कहा येह एतिराज़ उस शख़्स पर ज़ाहिर है जो ग़ौरो फ़िक्र करे।(المواہب اللدنیہ آخر البعوث النبویہ المکتب الاسلامی بیروت ا/۳۹۔۲۴۸)

इमाम बदर बिन जमाअह की तावील

और इमाम बदर बिन जमाअह ने तमाम उलमा के क़ौल की ये तावील की कि हदीस में जो 12 तारीख आई है उस से मुराद 12 का दिन गुज़रना मुराद है ना कि सिर्फ 12 रातें, और ज़ाहिर है कि 12 का दिन गुज़रना तेरहवीं तारीख़ का सही होना है जब कि तीनों महीने 30 के हों।

आला हज़रत का जवाब

आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहि रहमा ने इस इख्तिलाफ़ी मसले के जवाब में एक रिसाला बनाम {नुतक़ुल हिलाल}तहरीर फ़रमाया जो फतावा रज़वियह की 26 वीं जिल्द में मौजूद है। जिसमें आप अलैहि रहमा ने इस मसले को बड़े आसान अंदाज़ में हल फ़रमाया।

और इमाम बारज़ी और इमाम इब्ने कसीर के हवाले से इस मसले की इस तरह वज़ाहत फ़रमाई कि मक्का मुअज़्ज़मा में ज़ुलहिज्जा का चांद बुध की शाम को दिख गया था और पहली तारीख़ जुमेरात को और जुमा का अर्फ़ा यानी ज़ुल हिज्जा की 9 तारीख़ थी, मगर मदीने में दूसरे दिन चाँद दिखा लिहाज़ा मदीने में पहली तारीख़ जुमा की ठहरी और तीनों महीने यानी ज़ुलहिज्जा, मुहर्रम, सफ़र 30, 30 के हुए तो रबीउल अव्वल की पहली तारीख़ जुमेरात के दिन और बारहवीं तारीख़ पीर के दिन हुई। (فتاوی رضویہ،ج۲۶ص۴۲۱)

नक़्शा मुलाहिज़ा फ़रमाएं:

ज़ुल हिज्जा 10 हिजरी

जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
	1	2	3	4	5	**6**
7	8	9	10	11	12	**13**
14	15	16	17	18	19	**20**
21	22	23	24	25	26	**27**
28	29	30				

मुहर्रम 11 हिजरी

जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
			1	2	3	**4**
5	6	7	8	9	10	**11**
12	13	14	15	16	17	**18**
19	20	21	22	23	24	**25**
26	27	28	29	30		

सफर 11 हिजरी

जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
					1	**2**
3	4	5	6	7	8	**9**
10	11	12	13	14	15	**16**
17	18	19	20	21	22	**23**
24	25	26	27	28	29	**30**

रबीउल अव्वल 11 हिजरी						
जुमेरात	जुमा	सनीचर	इतवार	सोमवार	मंगल	बुध
1	2	3	4	5	6	**7**
8	9	10	11	12	13	**14**
15	16	17	18	19	20	**21**

पस इल्मे तक़वीम वाले मक्की तारीख़ से रसूलुल्लाह ﷺ की विसाले ज़ाहिरी की तारीख़ का हिसाब लगाते हैं इसलिए पीर के दिन रबीउल अव्वल की 12 तारीख़ नहीं आती जबकि रसूलुल्लाह ﷺ का विसाल मदीना में हुआ है और अहादीस में जो तारीख़ बयान हुई है वो मदनी तारीख़ यानी मदीने के एतिबार से है और जब मदनी तारीख़ के एतिबार से हिसाब लगाते हैं तो अहादीस और इल्मे तक़वीम दोनों इस बात की गवाही देते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ का ज़ाहिरी विसाल मुबारक पीर के दिन, रबीउल अव्वल की12 तारीख़ को हुआ है। लिहाज़ा अहादीस और इल्मे तक़वीम में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं।

अल्लाहु अकबर ! ऐ आशिक़ाने रज़ा! देखा आप ने हमारे आला हज़रत अलैहि रहमा ने कई सौ साल से चले आने वाले इख़्तिलाफ़ी मसले को कितने आसान और कम वक़्त में हल फरमा कर अहादीस और इल्मे तक़वीम के काइदों दोनों को सच्चा साबित कर दिया।

आला हज़रत अलैहि रहमा के इस जवाब पर एक सवाल भी किया गया लेकिन आला हज़रत अलैहि रहमा ने उस सवाल का जवाब इल्मे हैअत यानी फलकियात की रोशनी में ऐसा दिया जिस जवाब को सुन कर अकलें दंग रह जाती हैं कि आला हज़रत अलैहि रहमा को इल्मे फलकियात पर कैसा कमाल हासिल था। वह सवाल और जवाब मुलाहज़ा कीजिए :

मक्का में चांद कैसे दिख गया

अब यहां पर सवाल पैदा होता है कि 10 हिजरी के ज़ुलहिज्जा का चांद मक्का में बुध की शाम को दिख गया जिस की वजह से पहली तारीख़ जुमेरात को हुई और मदीना में चांद ना दिखा बल्कि मदीना में जुमेरात की शाम को दिखा जिस की वजह से मदीने में ज़ुलहिज्जा की पहली तारीख़ जुमा के दिन हुई। ऐसे कैसे हो गया ?

आला हज़रत का जवाब

इस सवाल का जवाब देते हुए आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहि रहमा ने जो कुछ फ़रमाया उस का आसान अंदाज़ में ख़ुलासा येह है कि:

यक़ीनन सवाल ग़ौर करने के काबिल है क्योंकि मक्का और मदीना के तूले बलद (longitude) और अर्ज़े बलद (latitude) में कोई ज़्यादा फ़र्क़ नहीं है बल्कि तूले बलद में दो दर्जे और अर्ज़े बलद में तीन दर्जे। और इस फ़र्क़ से येह हरगिज़ लाज़िम नहीं आता कि मक्का मुअज़्ज़मा में तो चाँद दिख जाये और मदीना में ना दिखे बल्कि अगर ऐसा हुआ तो मसला उस के उलट होगा यानी येह तो हो सकता है कि मदीना में दिख जाये और मक्का में ना दिखे क्योंकि जो शहर जिस क़दर मग़रिबी (west) जानिब होगा वहां चाँद दिखने का इम्कान ज़्यादा होगा और मदीना, मक्के की ब निस्बत मग़रिबी जानिब है।

पस इल्मे फ़लकियात के क़वाइद पर नज़र कीजिए तो वाक़ेई बुध का दिन मदीने में आदतन चाँद दिखने का ना था और जब मदीना में दिखने के काबिल ना था तो मक्के में तो और ज़्यादा दिखने के काबिल ना था।

लेकिन हुज़ूर पुरनूर (ﷺ) की बेशुमार बरकात और आपके मोजज़ात के पेशे नज़र येह बात मुहाल यानी ना मुमकिन नहीं थी कि ऐसे इम्कान ग़ैर मुतवक़्क़े की हालत में जुमा के दिन को फ़ज़ीलतो तौफ़ीक़ मिलने के लिए अल्लाह पाक के हुक्म से मक्का में बुध की शाम को चाँद नज़र आ गया हो और मदीने में हसबे आदत चाँद ना दिखा।

क्या लगातार तीन महीने 30 के हो सकते हैं ?

अब एक सवाल और होता है कि इस सूरत में तीनों महीने यानी ज़ुल हिज्जा, मुहर्रम, सफ़र 30 के हो रहे हैं और लगातार तीन महीने 30 के नहीं होते।

इस सवाल का जवाब देते हुए आला हज़रत अलैहि रहमा ने फ़रमाया: तीन महीने 29 के लगातार हो सकते हैं, तीन से ज़्यादा नहीं होते, और 30 के लगातार चार महीने हो सकते हैं, हाँ पाँच नहीं होते।(فتاوی رضویہ، ج۲۶، ص۴۲۳)

येह सब बयान करने के बाद आख़िर में इल्मे फ़लकियात की रोशनी में उन लोगों का रद्द फ़रमाया जिन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह(ﷺ) की ज़ाहिरी वफ़ात का दिन पीर का होना तो यक़ीनी है मगर पीर के दिन 12 तारीख़ होना दुरुस्त नहीं है बल्कि पीर के दिन 1 और 8 रबीउल अव्वल, या 2 और 9 रबीउल अव्वल होना है।

आला हज़रत अलैहि रहमा ने फ़रमाया: मगर हिसाब गवाह है कि उस साल (यानी11 हिजरी रबीउल अव्वल शरीफ़ की पहली या दूसरी तारीख पीर के दिन होना बातिल व मुहाल है, फ़क़ीर इस पर दो दलील रखता है।

फिर आला हज़रत अलैहि रहमा ने इल्मे फ़लकियात के वो शानदार मोती बिखेरे हैं जो पढ़ने से ताअल्लुक़ रखते हैं। लेकिन वो बातें उसी के समझ में आयेंगी जिसको इल्मे फ़लकियात का इलम हो।

अल्लाह पाक हमें आला हज़रत के फैज़ान से माला माल फ़रमाए और उनके इल्म से हिस्सा अता फ़रमाए। आमीन

नुत्क़ुल हिलाल रिसाला तसनीफ़ करने की वजह

19 रबीउल अव्वल 1317 हिजरी में आला हज़रत अलैहि रहमा से 7 सवालात पूछे गए जिनके जवाब में आप अलैहि रहमा ने एक मुकम्मल रिसाला तहरीर फ़रमाया जिसका नाम {नुत्क़ुल हिलाल बारिख़ु विलादिल हबीब वल विसाल} है, जिसका तर्जमा (हबीबे ख़ुदा की तारीख़े विलादत व विसाल पर चाँद की गवाही) और अजीब बात येह कि आला हज़रत अलैहि रहमा ने इस रिसाले का

ऐसा नाम रखा जिस के तमाम हर्फों के अदद 1317 हैं जो इस बात कि तरफ इशारा कर रहे हैं कि येह रिसाला किस सिने हिजरी में लिखा गया।

सात सवाल

आला हज़रतअलैहि रहमा से किए जाने वाले सात सवाल मुलाहज़ा कीजिए:

सवाल 1: इस्तिक़रारे नुतफ़ए ज़किय्या सैय्यदे आलम किस माह व तारीख में हुआ ?

सवाल 2: इस्तिक़रारे हमल का दिन क्या था ?

सवाल 3: मुद्दते हमल शरीफ़ किस कदर थी ?

सवाल 4: विलादत शरीफ़ का दिन क्या है ?

सवाल 5: क्या महीना था ?

सवाल 6: शमसी तारीख़ क्या थी ?

सवाल 7: वफ़ात शरीफ़ हुज़ूर पुरनूर(ﷺ) की तारीख़ क्या है ?

इन सवालात को पढ़ कर आप को कुछ ना कुछ अंदाज़ा ज़रूर हो गया होगा कि येह कितने मुश्किल सवालात हैं क्या इन के जवाबात कोई दे सकता है ?

येह सवालात अगरचे मुश्किल हैं लेकिन जब इमामे वक़्त, इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत अलैहि रहमा कि बारगाह पेश होते हैं तो मुश्किल होने के बावजूद आप अलैहि रहमा इन तमाम सवालात के जवाबात आसानी के साथ देते हुए नज़र आते हैं।

इन तमाम सवालात में सब से अहम और बुनियादी सवाल सातवाँ सवाल है जिस का जवाब आपने मुलाहज़ा किया। अब बाकी सवालात के जवाबात मुलाहज़ा कीजिए :

पहला सवाल और उस का जवाब

सवाल1: इस्तिक़रारे नुतफ़ए ज़किय्या सय्यदे आलम किस माह व तारीख में हुआ। यानी हमारे नबी (ﷺ) अपनी माँ के पेट में कब आए ?

जवाब:आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ) ने कई किताबों के हवाले से बयान फरमाया कि हमारे नबी (ﷺ) का नूर मुबारक हज़रते अब्दुल्ला (رضی اللہ عنہ) की

पुश्त से हज़रते आमिना (رضی اللہ عنہا) के रहम में ज़ुल हिज्जा की 12 तारीख को मुंतकिल हुआ। (فتاوی رضویہ، ج۲۶،ص۴۰۶)

दूसरा सवाल और उस का जवाब

सवाल2: इस्तिक़रारे हमल का दिन क्या था ?

जवाब: आला हज़रत (رحمۃاللہعلیہ) ने इस सवाल के जवाब में फरमाया : बाज़ ने पीर का दिन कहा है, लेकिन सही येह है कि हमारे नबी (ﷺ) का हमल मुबारक जुमेरात का दिन गुज़ार कर जुमा की रात को क़रार पाया।

इसी लिए इमाम अहमद अलैहि रहमा शबे जुमा को शबे क़द्र से अफ़ज़ल कहते हैं कि जुमा की रात में ऐसी ख़ैरो बरकत उतरी है जिस के जैसे ना कभी उतरी और ना क़ियामत तक उतरेगी। (فتاوی رضویہ، ج۲۶،ص۴۰۶۔۴۰۷)

तीसरा सवाल और उस का जवाब

सवाल3: हमल शरीफ़ की मुद्दत कितनी थी ?

जवाब: आला हज़रत (رحمۃاللہعلیہ) ने इस सवाल के जवाब में फरमाया : हमल की मुद्दत के बारे में दस माह, नौ माह, सात माह, छःमाह, सब कुछ कहा गया लेकिन सही नौ महीने हैं, जैसा कि शरह ज़ुर्क़ानी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की मुद्दते हमल पूरे नौ महीने है।(فتاوی رضویہ، ج۲۶،ص۴۰۷)

चौथा सवाल और उस का जवाब

सवाल4: विलादत शरीफ़ का दिन क्या है ?

जवाब: आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ) ने फरमाया:हमारे नबी (ﷺ) की पैदाइश के दिन के बारे में तमाम उलमा ने दो शंबा यानी पीर का दिन बयान किया है।

जैसा कि हमारे नबी (ﷺ) ने पीर के दिन के बारे में खुद फरमाया: {मैं इसी दिन(पीर के दिन) पैदा हुआ हूँ}। (فتاوی رضویہ، ج۲۶،ص۴۰۷)

पांचवां सवाल और उस का जवाब

सवाल5: विलादत शरीफ़ का क्या महीना था ?

जवाब: आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ) ने फरमाया:हमारे नबी (ﷺ) की पैदाइश के महीने के बारे में रजब, सफ़र, रबीउल अव्वल, मुहर्रम, रमज़ान सब कुछ कहा गया है, लेकिन सही और मशहूर क़ौल रबीउल अव्वल का है, मदारिज नामी किताब में है: मशहूर येह है कि अल्लाह पाक के आखिरी नबी (ﷺ) की पैदाइश मुबारक रबीउल अव्वल शरीफ़ के महीने में हुई।

(مدارج النبوۃ باب اول ولادت آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۲/۱۴)

रबीउल अव्वल शरीफ़ के महीने में पैदाइश होने के बारे में आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ) ने आठ हवाले पेश करने के बाद एक सवाल ज़िक्र फ़रमाते हुए लिखते हैं:

जब हमारे नबी (ﷺ) का हमल मुबारक ज़ुलहिज्जा में हुआ और रबीउल अव्वल में पैदाइश हुई तो ज़ुलहिज्जा से रबीउल अव्वल तक तीन महीने ही बनते हैं जब कि छः महीने से कम का हमल ना मुमकिन है, हालाँकि ऊपर सही क़ौल गुज़रा कि हमल शरीफ़ की मुद्दत नौ महीने है। तो येह तीनों बातें एक दूसरे के कैसे मुताबिक़ हो सकती हैं ?

आला हज़रत अलैहि रहमा इस सवाल को बयान करने के बाद खुद उस का जवाब देते हुए फ़रमाते हैं:

जाहिलीय्यत के ज़माने में महीने मुताअय्यन ना थे अरब वाले हमेशा ज़ुल हिज्जा को आगे पीछे कर लेते, जिसके सबब ज़ुलहिज्जा हर महीने में आ जाया करता, यहां तक कि सिद्दीक़े अकबर और हज़रते अली (رضی اللہ عنہما) ने जो हिजरत के नवें साल हज किया वो महीना वाक़ेई में ज़ुलक़ादा था, और दसवीं हिजरी में जब हमारे नबी (ﷺ) ने हज किया तो ज़ुल हिज्जा अपने ठिकाने से आया यानी अपने वक़्त पर आया।

(صحیح البخاری کتاب التفسیر سورۃ براۃ باب قولہ ان عدۃ الشہور الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۶۷۲)

लिहाज़ा हो सकता है कि ज़ुल हिज्जा से रबीउल अव्वल तक नौ महीने होते हों क्योंकि हर महिना दो बार आता था।

छठा सवाल और उस का जवाब

सवाल6: विलादत की शम्सी (यानी इंग्लिश) तारीख़ क्या थी ?

जवाब: आला हज़रत अलैहि रहमा ने इस सवाल के जवाब में इल्मे तक़वीम के क़ाईदों से हिसाब लगा कर आख़िर में फ़रमाया:हमारे नबी (ﷺ) की पैदाइश 20 अप्रैल, 571 ईसवी पीर के दिन हुई।

सातवाँ सवाल और उस का जवाब

सवाल7: वफ़ात शरीफ़ हुज़ूर पुरनूर (ﷺ) की तारीख़ क्या है ?

जवाब:इस सवाल का जवाब आपने शुरू में मुलाहिज़ा कर लिया है।

दुआ

अल्लाहुर्रहमान, की बारगाहे आलीशान, में बन्दए नाक़िसो नातमाम, बइज्ज़ो एहतिराम, ब वसीलए सरवरे ज़ीशान, (ﷺ) अर्ज़ गुज़ार है कि रब्बे करीम हमें नारे जहीम, से नजात अता करे, और औलियाए कामिलीन की ग़ुलामिए दिलनशीन में इस्तिक़ामत अता फ़रमाए, नीज़ फैज़ाने आला हज़रत से माला माल फ़रमाए। आमीन बिजाहिन्नबीइल अमीनﷺ

तारीख़े इब्तिदा

10 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1446 हिजरी, ब मुताबिक़ 15 अगस्त 2024 ईसवी बरोज़ जुमेरात, सुबह 10 बजे।

तारीख़े इख़्तिताम

10 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1446 हिजरी, ब मुताबिक़ 15 अगस्त 2024 ईसवी बरोज़ जुमेरात, ईशा के बाद रात 9 बजे।

अबू शफ़ी मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मन्कबते आला हज़रत

तू ने बातिल को मिटाया ऐ इमाम अहमद रज़ा

तू ने बातिल को मिटाया ऐ इमाम अहमद रज़ा
दीन का डंका बजाया ऐ इमाम अहमद रज़ा

ज़ोर बातिल का ज़लालत का था जिस दम हिन्द में
तू मुजद्दिद बन के आया ऐ इमाम अहमद रज़ा

अहले सुन्नत का चमन सर सब्ज़ था शादाब था
ताज़गी तू और लाया ऐ इमाम अहमद रज़ा

तूने बातिल को मिटा कर दीन को बख़्शी जिला
सुन्नतों को फिर जिलाया ऐ इमाम अहमद रज़ा

ऐ इमामे अहले सुन्नत नाइबे शाहे उमम
कीजिये हम पर भी साया ऐ इमाम अहमद रज़ा

इल्म का चश्मा हुवा है मोजज़न तहरीर में
जब कलम तू ने उठाया ऐ इमाम अहमद रज़ा

हश्र तक जारी रहेगा फ़ैज़ मुर्शिद आप का
फ़ैज़ का दरिया बहाया ऐ इमाम अहमद रज़ा

है ब दरगाहे खुदा अत्तारे आजिज़ की दुआ
तुझ पे हो रहमत का साया ऐ इमाम अहमद रज़ा

अमीरे अहले सुन्नत, इल्यास अत्तार क़ादरी

वाह क्या बात आला हज़रत की

मुस्तफ़ा का वह लाडला प्यारा, वाह क्या बात आला हज़रत की
गौसे आज़म की आंख का तारा, वाह क्या बात आला हज़रत की

सुन्नियों के दिलों में जिस ने थी, शमए इश्के रसूल रोशन की
वह हबीबे खुदा का दीवाना, वाह क्या बात आला हज़रत की

अल्लाह अल्लाह तबहहुरे इल्मी, अब भी बाकी है ख़िदमते क़लमी
अहले सुन्नत का है जो सरमाया, वाह क्या बात आला हज़रत की

इल्मो इरफ़ां का जो कि सागर था, खैर से हाफ़िज़ा क़वी तर था
हक़ पे मब्नी था जिस का हर फ़तवा, वाह क्या बात आला हज़रत की

उस की हस्ती में था अमल जौहर, सुन्नते मुस्तफ़ा का वोह पैकर
आलिमे दीन, साहिबे तक्वा, वाह क्या बात आला हज़रत की

जिस ने देखा उन्हें अक़ीदत से, क़ल्ब की आंख से मुहब्बत से
मरहबा मरहबा पुकार उठा, वाह क्या बात आला हज़रत की

सुन्नतों को जिला दिया जिस ने, दीं का डंका बजा दिया जिस ने
वह मुजद्दिद है दीनो मिल्लत का, वाह क्या बात आला हज़रत की

जो है अल्लाह का वली बेशक, आशिक़े सादिके नबी बेशक
गौसे आज़म का जो है मतवाला, वाह क्या बात आला हज़रत की

जिस ने एहक़ाके हक़ किया खुल कर, रद्दे बातिल किया सदा खुल कर
जो किसी से कभी न घबराया, वाह क्या बात आला हज़रत की

सुन लो किल्के रज़ा है वह ख़न्जर, आज भी जिस से लरजां अहले शर
बोल बाला है अहले सुन्नत का, वाह क्या बात आला हज़रत की

फिर बरेली शरीफ़ जाऊं मैं, ब-र-कतें मुर्शिदी की पाऊं मैं
कर लूं रौज़े का खूब नज़्ज़ारा, वाह क्या बात आला हज़रत की

मौला बहरे "हदाइके बख्शिश", बख़्श अत्तार को बिला पुरसिश
खुल्द में कहता कहता जाएगा, वाह क्या बात आला हज़रत की

अमीरे अहले सुन्नत, इल्यास अत्तार क़ादरी

वादी रज़ा की, कोहे हिमाला रज़ा का है

जल्वा है, नूर है कि सरापा रज़ा का है
तस्वीरे सुन्नियत है कि चेहरा रज़ा का है
वादी रज़ा की, कोहे हिमाला रज़ा का है
जिस सम्त देखिये वह 'इलाक़ा रज़ा का है
जो उस ने लिख दिया है, सनद है वो दीन में
अहले क़लम की आबरू नुक़्ता रज़ा का है
किस की मजाल है जो नज़र भी मिला सके
दरबारे मुस्तफ़ा में ठिकाना रज़ा का है
अगलों ने तो लिखा है बहुत 'इल्मे दीन पर
जो कुछ है इस सदी में वो तन्हा रज़ा का है
दरिया फ़साहतों के रवाँ शाइरी में हैं
येह सहले मुमतना है कि लहज़ा रज़ा का है
दस्तार आ रही है ज़मीं पर जो सर उठे
कितना बुलंद आज फरेरा रज़ा का है
छूता है आसमान को मीनार 'अज़्म का
या'नी अटल पहाड़ इरादा रज़ा का है
अल्फ़ाज़ बह रहे हैं दलीलों की धार पर
चलता हुवा क़लम है कि धारा रज़ा का है
इस दौरे पुर फ़ितन में, नज़र! ख़ुश अक़ीदगी
सरकार का करम है, वसीला रज़ा का है

शायर जमील नज़र

आला हज़रत का चर्चा रहेगा

क़ल्बे सुन्नी हमेशा कहेगा
आला हज़रत का चर्चा रहेगा
डंका उन का बजा है बजेगा
आला हज़रत का चर्चा रहेगा

जो कि अल्लाह के प्यारे वली हैं
हर तरफ धूम उन की मची है
ज़िक्र उनका ना हरगिज़ रुकेगा
आला हज़रत का चर्चा रहेगा

उनकी तारीफ़ करते रहेंगे
उन पे मरते हैं मरते रहेंगे
उनका दीवाना कैसे मिटेगा
आला हज़रत का चर्चा रहेगा

फ़ैज़े ग़ौसुल वरा भी मिला है
और फैज़ाने ख़्वाजा मिला है
फ़ैज़ का दरिया हर दम बहेगा
आला हज़रत का चर्चा रहेगा

हैं नक़ी ख़ान के वो दुलारे
और उल्मा के बेशक वो प्यारे
कोई उन सा बना ना बनेगा
आला हज़रत का चर्चा रहेगा

इश्क़ो उल्फ़त का नारा लगाया
आज बेख़ुद जो मैंने सुनाया
ये तराना ज़माना पढ़ेगा
आला हज़रत का चर्चा रहेगा

वसीम बेखुद माण्डलवी माण्डल जिला भीलवाड़ा राजस्थान

मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम

मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमअे बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

शहरे यारे इरम ताजदारे हरम
नौ बहारे शफाअत पे लाखों सलाम

हम गरीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फकीरों की सर्वत पे लाखों सलाम

जिस तरफ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

पतली पतली गुले कुद्स की पत्तियां
उन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम

जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद
उस दिल अफ़रोज़ साअत पे लाखों सलाम

किस को देखा येह मूसा से पूछे कोई
आँख वालों की हिम्मत पे लाखों सलाम

हाथ जिस सम्त उठा गनी कर दिया
मौजे बहरे समाहत पे लाखों सलाम

एक मेरा ही रहमत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम

काश ! महशर में जब उन की आमद हो और
भेजें सब उन की शौक़त पे लाखों सलाम

डाल दी क़ल्ब में अज़मते मुस्तफा
सय्यदी आला हज़रत पे लाखों सलाम

मुझ से खिदमत की कुदसी कहें हाँ रज़ा
मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम

इमाम अहमद रज़ा खान (رحمۃاللہعلیہ)

ٱلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْفِ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

आला हज़रत का तज़्किरए दिल नवाज़ कुरआन, हदीस और मैथ की रौशनी में
खुतबाते शफ़ीकी जिल्द दोम का एक मुन्फ़रिद बयान बनाम

आला हज़रत का चर्चा रहेगा

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

दुरूद शरीफ की अनोखी फ़ज़ीलत
बादशाहों के मकबरों का हाल
मुहब्बत और तारीफ में फ़र्क़
आला हज़रत के पास सब कुछ है
सोने का निराला अंदाज़
हर वक़्त नबी की तारीफ़
वलियों के तज़्किरे क्यों बाक़ी रहते हैं?
तज़्किरे बाक़ी रहने के चंद अस्बाब
9 के अदद की चार अजीब बातें
बरगाहे मुस्तफा की मशीन
फ़ना फिर्रसूल होने की दलील
मीलाद में बैठने का अंदाज़
आला हज़रत का तआरुफ
आला हज़रत की मन्क़बत

खतीब

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी,मुहम्मदे अरबी(صلی اللہ علیہ و سلم)के मुबारक नाम "मुहम्मद" और "अहमद" की ला जवाब तशरीह पर मुश्तमिल "ख़ुतबाते शफ़ीकी" हिस्सा अव्वल का एक मुन्फ़रिद बयान बनाम

मुहम्मद अल्लाह के मज़हर हैं

मुहम्मद और अहमद के राज़

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

दुरूद शरीफ़ की अनोखी फ़ज़ीलत	अल्लाह पाक के तीन हज़ार नाम
हुज़ूरﷺ के 1400 नाम	मुहम्मद ﷺ अल्लाह के मज़हर हैं
अस्माए इलाही का मज़हर	चार में अजीब लुतफ़ है
नुक़्ता ऐब है	मुशद्दद हर्फ़ लाने की हिक्मत
सिफ़ाते ख़ुदा का मज़हर	अफआले ख़ुदा का मज़हर
हर चीज़ में मुहम्मदﷺ का नूर है	ख़साइसे मुस्तफ़ाﷺ कितने हैं
हुज़ूरﷺ के चार नाम हम्द से मुश्तक़ हैं	अहमद नाम रखने की वजह

खतीब

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْفِ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْقِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

आम मुसलमान के लिये नमाज़ और उस के ज़रूरी अहकाम सीखने के लिये बेहतिरीन किताब बनाम

आसान हनफ़ी नमाज़

नमाज़ पढ़ने का आसान तरीक़ा

सवालन जवाबन

आप इस किताब में पढ़ सकेगें

दीनी इल्म सीखने की फ़ज़ीलत
वुज़ू के मसाइल
तयम्मुम के मसाइल
कपड़े पाक करने के तरीक़े
सज्दए सहव के मसाइल
माज़ूरे शरई के मसाइल
ईद के मसाइल
मुसाफ़िर के मसाइल
अज़ानो इक़ामत के मसाइल
नमाज़ में लुक़मा के मसाइल
मस्जिद के मसाइल
गुस्ल के मसाइल
नजासतों के मसाइल
नमाज़ के मसाइल
इमामत के मसाइल
जुमा के मसाइल
इक़्तिदा के मसाइल
नमाज़े जनाज़ा के मसाइल
सज्दए तिलावत के मसाइल

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِيْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

कई लड़कियां पैदा होने के बाद लोग कहते हैं"इस औरत को तलाक़ दे दो' आख़िर लड़कियों की पैदाइश में

क़ुसूर किस का ?

मर्द का या औरत का

इस्लाम और साइंस की रोशनी में

आप इस किताब में पढ़ सकेगें

ज़मानए-जाहिलियत की कुछ यादें
पाँच लर्ज़ा ख़ेज़ वारदातें
बेटियों के फ़ज़ाइल
साइंस क्या कहती है?
दिलचस्प सवालातो-जवाबात
इल्मुल जनीन क्या है?
बच्चे की पैदाइश का सबब क्या है?
बच्चे की पैदाइश का मरहला
बे औलादी के 4 रुहानी इलाज
औलादे नरीना के रुहानी इलाज

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली


شرح نور الایضاح
آسان
خطبات محرم
آسان فرض علوم
कुसूर किस का
आसान
हनफ़ी नमाज़
تدریس کے
26 طریقے
رفیق التدریس
आला हज़रत
का चर्चा रहेगा
نصاب مسائل نماز